

मिश्रित अर्थव्यवस्था

Q. What do you mean by Mixed Economy? discuss its Growth (development) features, Merits and demerits. (Scope) in India

भारतीय मिश्रित अर्थव्यवस्था

मिश्रित अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते हैं? इसकी विकास, विविधताएं, गुण और दोषों का वर्णन करें? (इसके क्षेत्र)

Ans:- मिश्रित अर्थव्यवस्था की धारणा अधिक पुरानी नहीं है। इस विकास वास्तव में पूँजीवाद और समाजवाद के बीच एक समझौता के रूप में हुआ है। इस मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र के सह-अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है किन्तु इसके लिए यह आवश्यक है कि निजी क्षेत्र अपने निजी हित की प्रेरणा को सामाजिक हित की प्रेरणा के साथ जोड़ ले। कुछ परिस्थितियों में तो निजी उद्यमों के कार्य संचालन की इजाजत इसी शर्त पर दी जा सकती है कि यह समग्र समाज की सेवा करें। इसके अलावा निजी उद्यम को अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में प्रधान स्थान नहीं दिया जा सकता। जबकि कुछ क्षेत्रों-कृषि एवं लघु उद्यमों में इसे पूर्ण स्वतंत्रता और पूर्ण विकास की इजाजत दी जा सकती है। कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जो सामरिक एवं राष्ट्रीय महत्व रखते हैं।

भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था में पूँजीवाद एवं समाजवाद के गुणों को अपनाया जाता है तथा पूँजीवाद के अवनुष्ठानों से दूर रहने की चेष्टा की जाती है। इस संबंध में प्रो. पार्नर ने कहा है कि - "मिश्रित अर्थव्यवस्था का अलभ्युत तथ्य है कि यह समाज के संगठन में समूहवाद तथा निजी उद्यमों के सिद्धान्त के रूप में अपनाकर दोनों को पूर्णतः -

वैधानिक साधन के रूप में स्वीकार करती है। इसका मूलभूत सिद्धान्त यह है कि किसी विशेष स्थिति में जिस तरीके से अधिकतम सामाजिक कल्याण प्राप्त हो उसे ही अपना चाहिए।

इस मिश्रित अर्थव्यवस्था में पूँजीवाद

और समाजवाद दोनों के लाभ प्राप्त होते हैं। मिश्रित अर्थव्यवस्था के विकास के विद्वान केन्स और हैन्सन ने विशेष भूमिका निभाई है। उनके अनुसार पूँजीवाद और समाजवाद के बीच आपसी तालमेल से मिश्रित अर्थव्यवस्था का विकास सम्भव हुआ। केन्स एक ऐसी अर्थव्यवस्था के पक्ष में थे जिसमें पूँजीवाद की अच्छाइयों को अपनाया जा सके और इसकी बुराइयों को दूर करने के लिए सरकार समाजवादी अर्थव्यवस्था के समान ही आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्र में हस्तक्षेप कर सके ताकि समाज का अधिकतम कल्याण हो। हैन्सन तथा केन्स के इन्हीं विचारों के फलस्वरूप मिश्रित अर्थव्यवस्था का विकास हुआ।

क्षेत्र मिश्रित अर्थव्यवस्था में भारत सरकार को आर्थिक क्रिया के क्षेत्र में सकरात्मक भाग लेना एवं अदा करना पड़ता है। कुछ उद्योग तो ऐसे हो सकते हैं जिनमें पूर्णतया सरकारी स्वामित्व हो, और कुछ ऐसे उद्योग हो सकते हैं जिनमें राज्य और निजी उद्यम का साझा स्वामित्व संबंध हो।

इस तरह मिश्रित अर्थव्यवस्था में केवा की समग्र आर्थिक प्रणाली तीन क्षेत्रों में बँट जाती है:-

- ① ऐसे क्षेत्र जिनमें उत्पादन एवं वितरण का पूर्ण स्वामित्व एवं नियंत्रण राज्य के हाथ में होता है और निजी क्षेत्र को

पूर्णतया निःसारित कर दिया जाता है।

(ii) ऐसे क्षेत्र जिनमें निजी उद्यम उत्पादन एवं वितरण में साझे रूप में सहयोग करते हैं।

(iii) ऐसे क्षेत्र जिनमें निजी उद्यम पूर्णतया क्रियाशील होता है और इस पर राज्य का सामान्य नियंत्रण एवं विनियमन होता है।

ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें निजी एवं सार्वजनिक उद्यमों का सह-अस्तित्व होता है 'इस संघर्ष में हैन्सन के शब्दों में द्वैध अर्थव्यवस्था का प्रयोग किया और लर्नर ने मिश्रित अर्थव्यवस्था का, किन्तु वाक्य मिश्रित अर्थव्यवस्था का प्रयोग लेकर ने अपनी कृतियों में प्रारम्भ कर दिया और अब यह एक स्वीकृत वाक्य बन गया।

मिश्रित अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हुई है जो अलग अलग मार्केट एवं आर्थिक योजनाओं का मिश्रण है साथ ही साथ सार्वजनिक एवं निजी स्वामित्व का समन्वय होता है। इस अर्थव्यवस्था में एक ऐसी प्रणाली होती है जिसमें समाजवाद और पूँजीवाद दोनों की विशेषताओं को समाहित किया जाता है। भारत के साथ साथ अनेक देशों में भी समाजवादी और पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का मिश्रण के रूप में विकसित हुआ है।

हमारे भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था द्वैध-कोण के स्वतन्त्रता के बाद आर्थिक प्रणाली में लागू किया गया है। भारत में वर्ष 1948 और 1956 ई. में लागू औद्योगिक नीतियों ने निजी और सार्वजनिक क्षेत्र को सह अस्तित्व में लाने में मदद की है। इसके साथ ही साथ विकास होते ही भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण के साथ निजी क्षेत्र के विस्तार और विकास के अवसर बड़े हैं। आजादी के बाद भारत में आर्थिक विकास के लिए कई नीतियों को अपनाया

(4)

और तकनीकी वैज्ञानिक एवं औद्योगिक विकास की नींव रखी। आज यह भारत मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला देश बनकर खड़ा है। पंडित नेहरू ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए समाजवादी-मिश्रित अर्थव्यवस्था पर काफी ध्यान दिया था। यही उनका विकास मॉडल था। मिश्रित अर्थव्यवस्था में सरकार उन

सेवाओं को प्रदान करती है जो आर्थिक विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। सरकार के हाथों में आर्थिक नियोजन की जिम्मेदारी होती है। इस आर्थिक नियोजन के द्वारा सरकार निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र की सीमा का विभाजन करती है तथा योजना के लक्ष्यों को निर्धारित करती है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में सरकार इस बात का निर्णय लेती है कि निजी क्षेत्र पर किस प्रकार की और कितना नियंत्रण एवं निर्देशन किया जाय। इसके साथ साथ सरकार निजी क्षेत्र को समुचित प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहायता भी देती है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था की विशेषताएं:-

- विद्वानों ने मिश्रित अर्थव्यवस्था के लिए निम्नलिखित विशेषताएं प्रस्तुत की हैं—
- ① पूंजीवाद और समाजवाद के बीच का रास्ता:-
मिश्रित अर्थव्यवस्था की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि यह पूंजीवाद एवं समाजवाद के बीच का रास्ता है अथवा उनके बीच एक समझौता है। इसके अन्तर्गत पूंजीवाद के दोषों से दूर रहने की चेष्टा की जाती है तथा पूंजीवाद के गुणों को अपनाकर आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया।

(5)

② नियोजित अर्थव्यवस्था :-

मिश्रित अर्थव्यवस्था निम्नलिखित ही एक नियोजित अर्थव्यवस्था होती है। नियोजित अर्थव्यवस्था का तात्पर्य यह है कि सरकार एक निश्चित आर्थिक नियोजन करती है साथ ही निजी क्षेत्र पर आवश्यक नियंत्रण एवं निर्देशन का कार्य किया जाता है तथा आर्थिक एवं सामाजिक हितों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक क्षेत्र का संचालन किया जाता है।

③ निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों का अस्तित्व - भारतीय अर्थव्यवस्था के निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों का अस्तित्व एवं अर्थव्यवस्था के विकास के लिए निजी उपक्रम, साहस एवं उद्योग का सहारा लिया जाता है लेकिन निजी क्षेत्र को पूर्णतः मुक्त एवं स्वतंत्र नहीं छोड़ा नहीं जाता है। इसमें सार्वजनिक उपक्रम भी पाये जाते हैं और निजी उपक्रम भी। परन्तु वे राष्ट्रीयकरण के भय से निजी उपक्रम अधिक कुशलता से कार्य करने का प्रयत्न करते हैं जिससे सामाजिक कल्याण में वृद्धि होती है। अतः मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों का सह-अस्तित्व पाया जाता है।

④ निर्णय लेना - मूल्य तंत्र निजी क्षेत्र में संचालित होता है और वजत तंत्र सार्वजनिक में संचालित होता है। हालांकि निजी क्षेत्र में कीमतें, कुद मालों में बायद सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा नियंत्रित होती हैं, जैसे भारत सरकार ठारियों के कल्याण के लिए निजी कम्पनियों द्वारा निर्मित कुद आवश्यक दवाओं की कीमतों पर मूल्य सीमा लगा सकती है।

⑤ सहाधिकारी वाकि का नष्ट होना :- मिश्रित अर्थव्यवस्था में सरकार सहाधिकार को नियंत्रित करती है। सहाधिकारी उत्पादन को कम करके और कीमतों को बढ़ाकर काफी मुनाफा कमाता है मिश्रित अर्थव्यवस्था में सरकार इन सभी मुद्दों पर ध्यान देती है।

⑥ उपभोक्ता सम्प्रभुता - मिश्रित अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता सम्प्रभुता

नष्ट नहीं होती है, वास्तव में सरकार उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करती है। मूल्य नियंत्रण उपभोक्ताओं की सुरक्षा का एक तरीका है।

(7) निजी क्षेत्र का नियंत्रण :- सरकार मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र को स्पष्ट रूप से नियंत्रित करती है। निजी क्षेत्र को देश की भलाई को ध्यान में रखते हुए कार्य करना चाहिए न कि पूँजी के कुछ अमीर मालिकों के निहित स्वार्थों के साथ। सरकार कीमतों को नियंत्रित करने के लिए प्रकाशित मूल्य, मूल्य फर्क, मूल्य हल सब्सिडी, कर और सार्वजनिक वितरण प्रणाली जैसी विभिन्न तकनीकों का उपयोग करती है।

उपर्युक्त तथ्यों के अध्ययन करने से यह प्रतीत होता है कि भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त को अपनाया गया है। कृषि उद्योग, व्यापार-व्यवसाय के संचालन एवं विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के साथ साथ निजी क्षेत्र के सहयोग को भी महत्व प्रदान किया गया है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था के गुण (लक्षण) :-
गुण (Merit) :-

मिश्रित अर्थव्यवस्था में पूँजीवाद और समाजवाद दोनों के लाभ प्राप्त होते हैं तथा दोनों के दोषों का निराकरण इसमें किया जाता है। यही कारण है कि मिश्रित अर्थव्यवस्था ने अर्थशास्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित किया है। विद्वानों के अनुसार इसके निम्नलिखित गुण एवं लाभ बताये गये हैं :-

(1) आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता :- मिश्रित अर्थव्यवस्था में लोगों

(7)

को पर्याप्त मात्रा में आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त होती है। उदाहरणस्वरूप उत्पादकों को स्वैच्छापूर्वक उत्पादन करने एवं अपने उत्पादों का क्षेत्र-चुनने की स्वतन्त्रता रहती है। श्रमिकों को भी अपने व्यावसाय चुनने की स्वतन्त्रता रहती है तथा उपभोक्ताओं को स्वतन्त्र रूप से अपनी आय को खर्च करने का अधिकार होता है। आर्थिक स्वतन्त्रता से निजी प्रेरणा को बढावा मिलता है जिससे आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

(ii) निजी सम्पत्ति, निजी लाभ एवं मूल्य यन्त्रों की उपस्थिति : —

मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी सम्पत्ति

निजी लाभ एवं मूल्य यन्त्र विद्यमान रहते हैं। वास्तव में ये पूँजीवाद के गुण हैं, जो अर्थव्यवस्था के विकास में मदद करते हैं। निजी सम्पत्ति निजी लाभ की प्रथा रहने से लोग अधिक परिश्रम करते हैं तथा अपनी कार्यकुशलता में वृद्धि करते हैं। सरकार निजी सम्पत्ति एवं व्यक्तिगत लाभ पर तभी नियंत्रण करती है जब उनसे समाज में कौटुम्बिकता करने की सम्भावना रहती है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धात्मक एवं स्वतन्त्र मूल्य यन्त्र भी पाये जाते हैं जिनसे साधनों के समुचित वितरण एवं उत्पादन में कुशलता लाने में मदद मिलती है।

(iii) आर्थिक नियोजन एवं आर्थिक स्थायित्व : — समाजवादी अर्थव्यवस्था की तरह ही मिश्रित अर्थव्यवस्था में आर्थिक नियोजन का सहारा लिया जाता है। नियोजन के अन्तर्गत साधनों का समुचित संरक्षण एवं विकास किया जाता है तथा विभिन्न नीतियों द्वारा आर्थिक क्रियाओं पर नियंत्रण भी रखा जाता है। इससे फलस्वरूप देश में आर्थिक स्थायित्व प्राप्त किया जाता है तथा अर्थव्यवस्था को व्यापार-युक्त के उथल-पुथल से बचाने में मदद मिलती है।

(iv) निजी और सार्वजनिक क्षेत्र का सहअस्तित्व : — इस मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों का विकास का अवसर प्राप्त होता है। इससे देश में समन्वित आर्थिक विकास में मदद मिलती है तथा उत्पादन एवं वितरण की क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य समाज कल्याण

में वृद्धि करना होता है।

⑤ आर्थिक विषमता में कमी :-

समाजवादी सिद्धान्तों के आधार पर सरकार मिश्रित अर्थव्यवस्था में विभिन्न तरीकों द्वारा आर्थिक विषमता को कम करने का प्रयास करती है। समाज में व्याप्त धन एवं आय की विषमता को कम करने के लिए धनी व्यक्तियों पर अधिक मात्रा में कर लगाये जाते हैं तथा ग़रीबों को उनीचे की भलाई एवं समाज कल्याण के कार्यों पर खर्च किया जाता है। स्काधिकारी प्रवृत्तियों द्वारा श्रमिकों एवं उपभोक्ताओं के शोषण को रोकने के भी प्रयत्न किये जाते हैं।

इन लक्ष्यों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि मिश्रित अर्थव्यवस्था द्वारा देश के आर्थिक विकास के साथ साथ मानव जीवन के स्तर में परिवर्तन करने की कोशिश सफलता को प्राप्त कर सकती है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था के -

दोष (अवगुण) :- अर्थव्यवस्था के गुणों के साथ साथ अवगुणों (दोषों) के भी व्यक्त किया है जो अलग लिखित हैं -

① मिश्रित अर्थव्यवस्था का अन्त :- कहा जाता है कि यह मिश्रित अर्थव्यवस्था अधिक समय तक कायम नहीं रह सकती और अन्ततः यह व्यवस्था समाप्त हो जाती है। इस व्यवस्था में यह सम्भावना बनी रहती है कि निजी क्षेत्र इतना विलुप्त हो जाता है कि वह सार्वजनिक क्षेत्र पर निर्भर रहने लगे। अथवा निजी क्षेत्र सार्वजनिक क्षेत्र के मार्ग में बाधा उत्पन्न करने लगे। ऐसी परिस्थितियों में यह मिश्रित अर्थव्यवस्था अधिक समय तक कायम नहीं रह सकती। इस व्यवस्था में कठिनाइयों उत्पन्न होते हैं जिस की ओर अग्रसर हो जाती है।

② आर्थिक निर्णय में देरी :- इस मिश्रित अर्थव्यवस्था में कुछ निर्णय लेने में देरी होती है। स्वतंत्र सार्वजनिक क्षेत्र के मामले में। इस प्रकार की निर्णय में देरी देखा अर्थव्यवस्था के सुचारु संचालन के मार्ग में एक बड़ी बाधा बनती है।

(III) दक्षता की कमी - इस मिश्रित प्रणाली में दक्षता की कमी के कारण दोनों क्षेत्रों को काफी नुकसान होता है। सार्वजनिक क्षेत्र में ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सरकारी कर्मचारी जिम्मेदारी के साथ अपना कर्तव्य नहीं निभाते हैं जबकि निजी क्षेत्र में दक्षता कम हो जाती है क्योंकि सरकार नियंत्रण परभित और लाइसेंस आदि के रूप में बहुत सारे प्रतिबंध लगाती है।

(IV) अपर्याप्त योजना :- मिश्रित अर्थव्यवस्था में ऐसी व्यापक योजना नहीं है इसलिए अर्थव्यवस्था का बड़ा से बड़ा क्षेत्र सरकार के नियंत्रण से बाहर रहता है। इस व्यवस्था में अपर्याप्त क्षमता योजना धातक है।

(V) निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों की असमता :- इस मिश्रित प्रणाली के तहत दोनों क्षेत्र अप्रभावी हैं। निजी क्षेत्र को पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिलती है इसलिए यह अप्रभावी हो जाता है। यह सार्वजनिक क्षेत्र में अप्रभाविता की ओर जाता है। सही अर्थों में दोनों क्षेत्र न केवल प्रतिस्पर्धी हैं बल्कि पूरक भी हैं।

(VI) अस्थिरता का होना - कुछ अर्थवास्तिकों का दावा है कि मिश्रित अर्थव्यवस्था सबसे अस्थिर है। सार्वजनिक क्षेत्र को अधिकतम लाभ मिलता है। जबकि निजी क्षेत्र नियंत्रित रहता है।

(VII) भ्रष्टाचार एवं कालाबाजारी :- इस मिश्रित प्रणाली में हमेशा भ्रष्टाचार और कालाबाजारी होती है। राजनीतिक दलों एवं स्वार्थी लोग सार्वजनिक क्षेत्र से अनुचित लाभ उठाते हैं। साथ भ्रष्टाचार, चोरी, कालाबाजारी एवं रिश्वत तथा अन्य गतिविधियों का जन्म होता है।

अतः इस मिश्रित अर्थव्यवस्था में राष्ट्रवाद एवं लोक कल्याण की भावना लुप्त होने लगती है एवं दोनों क्षेत्रों के मार्ग पर अग्रसर होता है।